

डॉ. गैरी मीडर्स, 1 कुरिन्थियों, व्याख्यान 3, बाइबल हमें कैसे सिखाती है। बाइबल शिक्षण के तीन स्तर, भाग 1।

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी मीडर्स 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह व्याख्यान 3 है, बाइबल हमें कैसे सिखाती है। बाइबल शिक्षण के तीन स्तर, भाग 1।

खैर, नमस्कार और 1 कुरिन्थियों पर हमारी श्रृंखला के तीसरे वीडियो में आपका स्वागत है।

हम अभी भी कुछ परिचयात्मक मामलों में लगे हुए हैं। हमारे पहले दो वीडियो में, हमने उपलब्ध बाइबल अनुवादों के बारे में जागरूक होने के मुद्दे पर चर्चा की, विशेष रूप से अंग्रेजी में इस श्रृंखला में, और आप पवित्रशास्त्र के अपने अध्ययन में विभिन्न प्रकार की बाइबलों का सर्वोत्तम उपयोग कैसे कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि आपने इसके बारे में सोचा होगा और आपने अनुवादों की औपचारिक और गतिशील तुल्यता के बीच के इस अंतर को अपने दिमाग में बिठा लिया होगा और आप पवित्रशास्त्र की बेहतर व्याख्या करने, अनुवाद के बारे में खुद चीजें सीखने और अन्य ईसाइयों की मदद करने में सक्षम होने के लिए उस निरंतरता में अनुवादों की एक श्रृंखला का उपयोग कैसे कर सकते हैं, जो कभी-कभी इस बात से जूझते हैं कि बाइबल क्या कहती है और बाइबलें अलग-अलग क्यों हैं।

मुझे लगता है कि हमने अपने पहले दो व्याख्यानों में जो कुछ भी बात की थी, उससे आपको उसे बेहतर तरीके से समझने में मदद मिलनी चाहिए और दूसरों को भी उसे समझाना चाहिए। अब, इस परिचय में मैं एक और बात करना चाहता हूँ, क्योंकि हम 1 कुरिन्थियों के पाठ से निपटने के लिए तैयार हैं, वह है इस बारे में बात करना कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है। हम इस बारे में सोचने में बहुत समय बिताते हैं कि बाइबल हमें क्या सिखाती है, लेकिन मैं इस बारे में थोड़ा सोचना चाहूँगा कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है।

मैंने इसे कई क्षेत्रों में किया है, और मेरा हैंडआउट एक निश्चित स्थिति के लिए तैयार किया गया था, जो वास्तव में 1 कुरिन्थियों का परिचय नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत प्रासंगिक होगा, क्योंकि हम इस पर आगे बढ़ेंगे। और मैं इसे कहता हूँ, बाइबल हमें कैसे सिखाती है? बाइबिल शिक्षण के तीन स्तर। और हम हैंडआउट में इसका पता लगाएंगे, या जैसा कि उपशीर्षक कहता है, चर्च में उठने वाले धार्मिक मतभेदों को समझने के लिए एक प्राइमर।

पहली बार जब मैंने इस तरह से इस व्याख्यान को एक साथ लाया, भले ही मैं इन वस्तुओं को विभिन्न तरीकों से अलग-अलग पढ़ा रहा था, ऐसी स्थिति में था जब ईसाई धार्मिक विचारों में मतभेदों के माध्यम से काम करने की कोशिश कर रहे थे। और यह काफी अस्थिर हो सकता है, खासकर जब कोई संगठन लंबे समय से किसी चीज के लिए प्रतिबद्ध हो, और जैसे-जैसे समय बीतता है, शायद हमें बाइबल की बेहतर समझ हो, और इसे चुनौती दी जाने लगे। और इसलिए, ईसाई लगातार इस तनाव में रहते हैं कि हम अलग-अलग राय क्यों रखते हैं। और मुझे लगता है कि मैं आज आपको एक मॉडल दे सकता हूँ, और आपके पास जो हैंडआउट है, जो कि फाइल

नंबर 3 है, आपके पास जो हैंडआउट है, वह पूरी तरह से बताया गया है, और आप इसके माध्यम से काम करने में सक्षम होंगे, और इस तरह की चेतना तक पहुंचेंगे कि दूसरों के साथ बातचीत में बाइबल का उपयोग करने का क्या मतलब है, खासकर उन लोगों के साथ जिनसे आप असहमत हैं।

मुझे लगता है कि यह उस बातचीत से बहुत सारी अस्थिरता को दूर कर सकता है और इसे इस आधार पर रख सकता है कि बाइबल वास्तव में क्या कहती है और यह हम पर कैसे लागू होती है। अब, आइए इस बारे में सोचें। हमारी ईसाई यात्रा के आकर्षक पहलुओं में से एक यह देखना है कि एक ही बाइबिल पाठ से कितने अलग-अलग दावे और कितनी अलग-अलग व्याख्याएँ की जा सकती हैं।

इससे पहले कि आप इसका सामना करें, आपको बहुत ज़्यादा समय तक जीने की ज़रूरत नहीं है। हाल के दशकों में, 1 तीमुथियुस 2:12, जहाँ पौलुस महिलाओं और शिक्षण के सवाल के बारे में बात करता है, एक बहुत ही अस्थिर पाठ रहा है। आप इस पर कैसे पहुँचे हैं? और आप जानते हैं कि अगर आपने 1 तीमुथियुस 2:12, यहाँ तक कि 2:12-15 के सवाल पर शोध किया है, तो आप बहुत जल्दी इस बात पर कई दृष्टिकोण और स्थितियाँ प्राप्त कर सकते हैं कि उस पाठ का क्या मतलब है।

खैर, कौन सा सही है? या आज चमत्कारी उपहारों की भूमिका पर आपका क्या विचार है? मुझे यकीन है कि बाइबिल ई-लर्निंग जैसे दर्शकों में, हमारे पास 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में पाए जाने वाले करिश्माई अभिव्यक्तियों के बारे में कई तरह के विचार हैं, और हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे। खैर, आप कैसे समझेंगे कि उनमें से कौन सी स्थिति सबसे सटीक है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किससे पूछते हैं, या शायद आपने कौन सी किताब पढ़ी है। शायद आपने कोई ऐसी किताब पढ़ी हो जो आपको वाकई आकर्षित करती हो, और यह बहुत प्रेरक लगती हो, और आप कहते हैं, आह, यही वह दृष्टिकोण है जिसे मैं अपनाऊंगा।

और फिर आप दूसरी किताब उठाते हैं, और यह भी एक अलग दिशा में उतनी ही प्रेरक होती है। आप इस तरह के संघर्षों और दावों से कैसे निपटते हैं? यही मैं बात करना चाहता हूँ। इस विविधता का तथ्य इस संबंध में कुछ और दृष्टिकोण खोलता है कि ईश्वर ने अपने संसार को कैसे संचालित करने के लिए बनाया है और उस संसार में हमारी क्या स्थिति है।

इस विविधता का तथ्य यह तर्क नहीं देता कि सभी दृष्टिकोण समान रूप से मान्य हैं। हम यहीं तक नहीं जाना चाहते। तथ्य यह है कि हमारे पास पाठ पर विचारों और व्याख्याओं की बहुलता है, इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपने हाथ ऊपर उठा लें और कहें कि, ठीक है, जो भी आपको सबसे अधिक प्रभावित करता है उसे ले लें।

क्योंकि दिन के अंत में, अधिकांश ग्रंथों में, शायद सभी में नहीं, लेकिन अधिकांश ग्रंथों में, एक दृष्टिकोण होगा जो सबसे अधिक सम्मोहक होगा। लेकिन आप उस तक कैसे पहुँचते हैं, और अगर किसी और को लगता है कि कोई दूसरा दृष्टिकोण अधिक सम्मोहक है तो आप क्या करते हैं? हमारे पास यह निरंतर तनाव रहता है कि कौन सा दृष्टिकोण सबसे अच्छा विकल्प है। यह

विविधता दर्शाती है कि बाइबल के पूरे इतिहास में, हमने देखा है कि बाइबल कई तरह के पाठों के अधीन है।

यह लगभग तुरंत ही सच था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में भी, हम ईसाई कार्यकर्ताओं के बीच कुछ विवाद देखते हैं जो इसे प्रकट करते हैं। और इसलिए, परिणामस्वरूप, हम इस बारे में बात करना चाहते हैं कि हम आयतों के बारे में विभिन्न राय के माध्यम से कैसे काम कर सकते हैं, और मैं आपको ऐसा करने में मदद करने के लिए एक प्रतिमान देना चाहता हूँ।

अब, विचारों की यह विविधता एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करती है। वे प्रमुख धार्मिक निर्माणों की तरह गंभीर हो सकते हैं। यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, संयुक्त राज्य अमेरिका में, जिसे हम मॉर्मनवाद कहते हैं, और सात दिवसीय एडवेंटिज्म कुछ धार्मिक विचारों के संबंध में बहुत बड़ी रचनाएँ हैं।

और हां, आज दुनिया में कुरान और इस्लाम का सवाल है, जो हमारे दायरे से बाहर है क्योंकि हम बाइबल की व्याख्या के बारे में बात कर रहे हैं। हमारे पास कई तरह के संप्रदाय हैं, बपतिस्मा देने के कई तरीके हैं, मंत्रालय में महिलाओं की भूमिका पर कई तरह के विचार हैं। हमारे पास अंत समय के बारे में कई तरह के विचार हैं, जिसे हम एस्केटोलॉजी कहते हैं।

यीशु कब आएंगे? यीशु पृथ्वी के इतिहास का समापन कैसे करेंगे? हर कोई एक ही पाठ का उपयोग करता है और उन पाठों के अर्थों के बारे में अलग-अलग दावे करता है। यह एक तथ्य है। यदि आप किसी पुस्तकालय में जाएं और उन विषयों पर लिखने में सक्षम लोगों द्वारा लिखी गई दस पुस्तकें देखें, तो आपको एकमत राय नहीं मिलेगी।

आपको कई तरह के विचार मिलेंगे। आप पाएंगे कि वे सभी एक ही बाइबिल पाठ का अध्ययन कर रहे हैं, लेकिन वे उन पाठों के बारे में अलग-अलग निष्कर्ष पर पहुंच रहे हैं। क्या यह बाइबिल को सापेक्षता के रसातल में फेंक देता है? नहीं।

यह इस तथ्य को दर्शाता है कि परमेश्वर ने हमें एक शास्त्र दिया है, और हमारे पास कई, कई अलग-अलग व्याख्याकार हैं। हमारे पास एक प्रेरित पाठ और शास्त्र का एक आधिकारिक पाठ है, लेकिन हम खुद को कई अप्रेरित, यानी शास्त्र के व्याख्याकारों के साथ पाते हैं जो अलग-अलग राय रखते हैं। यह ईसाई विश्वदृष्टि का एक हिस्सा है कि इस तथ्य को देखें और समझें कि एक चर्च में भी मतभेद हैं जो कि हम परमेश्वर, मसीह और शास्त्र के अधिकार के बारे में रूढ़िवादी आम विभाजकों द्वारा एक साथ बंधे हुए हैं।

इसलिए, हम सभी को इस पर काम करने की ज़रूरत है। और 1 कुरिन्थियों जैसी किताब में, हम देखेंगे कि पाठ के लिए निश्चित रूप से बहुत सारे अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। अब, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब हम व्याख्याओं की इस विशाल विविधता को देखते हैं, तो बाइबल को पढ़ने और उपयोग करने के मामले में चर्च कठिन समय से गुज़र रहा है।

अब, आइए पेज 9 पर थोड़ा और सोचें, जो इस विशेष हैंडआउट का दूसरा पेज है। विविधता या इसकी उलझन में उलझने के बजाय, मुझे लगता है कि एक बेहतर तरीका है। और मैं कुछ चीजों के बारे में बात करना चाहता हूँ।

सबसे पहले, मैं बाइबल और उसके पाठकों को खोजने के बारे में बात करना चाहता हूँ। जब हम बाइबल को ज्ञान के स्रोत के रूप में इस्तेमाल करते हैं और यह दावा करते हैं कि यह क्या सिखाती है, तो हम ज्ञानमीमांसा नामक अनुशासन में शामिल होते हैं। अब, उस बड़े शब्द से डरो मत।

यह दर्शनशास्त्र के क्षेत्र का हिस्सा है। ज्ञानमीमांसा का मतलब सिर्फ यह है कि हम क्या जानते हैं और हम इसे कैसे जानते हैं। और यह कहने का एक बहुत ही व्यावहारिक तरीका है, लेकिन यही मुख्य बात है।

हम ज्ञानमीमांसा के मुद्दे पर चर्चा करते हैं। तकनीकी रूप से, ज्ञानमीमांसा का संबंध हमारे ज्ञान के स्रोतों, हमारे ज्ञान की प्रकृति और हम जिस ज्ञान का दावा करते हैं, उसे कैसे प्रमाणित करते हैं, से है। अब, जब हम इस पर विचार करते हैं, तो यह तथ्य कि हमारे पास एक प्रेरित पाठ है और फिर भी कई अप्रेरित व्याख्याकार और उनकी व्याख्याएँ इस बात का प्रमाण हैं कि विचारों की जो विविधता मौजूद है, वह किसी न किसी अर्थ में ईश्वर द्वारा दुनिया को संचालित करने के तरीके के कारण है।

ईश्वर ने हमें बाइबल का कोई केंद्रीय प्रेरित व्याख्याता नहीं दिया है जिसके पास हर किसी को जाना पड़े। चर्च के इतिहास में शायद कुछ छोटे मॉडल रहे हैं जहाँ ये चीज़ें होती हैं, लेकिन शास्त्रों में इसे इस तरह से प्रस्तुत नहीं किया गया है। हमारे पास यह विविधता है, इसलिए तथ्य यह है कि हमारे पास एक प्रेरित शास्त्र है और हमारे पास कई व्याख्याएँ हैं, हमें अपने ईसाई विश्वदृष्टिकोण में इसके माध्यम से काम करना होगा और इस तथ्य को समझना होगा कि, कुछ अर्थों में, यह ईश्वर की दुनिया को दर्शाता है।

एक बाइबल, एक ईश्वर, और फिर भी हम शास्त्र की सभी शिक्षाओं के संबंध में कभी भी पूर्ण एकता हासिल नहीं कर पाए हैं। हमारे पास एकता का एक अच्छा आधार है जो हमें एक साथ रखता है, लेकिन उसके बाद हमारे पास बहुत विविधता है। अब, कुछ लोग दावा कर सकते हैं कि पवित्र आत्मा यह जानने में तुरही है कि एक अंश क्या सिखाता है।

हम इस बारे में 1 कुरिन्थियों 2 पर थोड़ा और बात करेंगे, लेकिन आत्मा की भूमिका आपको शास्त्र का सार-तत्व बताना नहीं है। पवित्र आत्मा की भूमिका आपको यह विश्वास दिलाना है कि शास्त्र आवश्यक और आधिकारिक हैं और आपको पाठ के अर्थ की जांच करने के बारे में बहुत गंभीर होने की आवश्यकता है। आत्मा की भूमिका विश्वास दिलाने की भूमिका है।

वास्तव में, यह एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग इन मुद्दों के संबंध में शास्त्र के अध्ययन में किया जाता है। यह दृढ़ विश्वास की अवधारणा है, विषय-वस्तु की अवधारणा नहीं। हम ईश्वर की छवि में बनाए गए हैं और बाइबल का अध्ययन करने और इसके अर्थ के बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए जिम्मेदार हैं।

और भले ही हमारे पास निष्कर्षों की यह विविधता हो, हमें उन निष्कर्षों के साथ जीना होगा जिन्हें हम एकता में देखते हैं, यहां तक कि उन लोगों के साथ भी जिनके कुछ अलग विचार हो सकते हैं, उस बड़े छत्र के नीचे जो स्वीकार्य है, जिसे हम रूढ़िवाद कहते हैं। अब, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, क्योंकि हमारे पास व्याख्याओं की यह महान विविधता है, और फिर भी हमारे पास यह एक बाइबिल है जिसे लोग अलग-अलग तरीके से पढ़ते हैं, क्या इसका मतलब यह है कि हम व्याख्या में सापेक्षवाद के लिए अभिशप्त हैं? कि कुछ भी ठीक है। इस वाक्यांश का उपयोग संस्कृति में किया गया है, जिस संस्कृति में मैं पिछले कुछ वर्षों से रह रहा हूँ, जिसे कुछ भी कहा जाता है।

जब लोग किसी तीखी बहस में उलझ जाते हैं तो वे बस हाथ खड़े कर देते हैं और कुछ भी कह देते हैं, जो सवाल पर चर्चा से बचने के लिए एक तरह का बहाना बन जाता है। नहीं, जब बात शास्त्र की व्याख्या की आती है तो हम हाथ खड़े करके कुछ भी नहीं कहते। हम जांच करते हैं।

हम यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि एक निश्चित दृष्टिकोण द्वारा दावा किए जाने वाले तर्क की सबसे अच्छी रेखाएँ क्या हैं और उन तर्कों की तुलना दूसरे से करते हैं ताकि हम विभिन्न व्याख्याओं के माध्यम से काम करें और हम उन व्याख्याओं की निरंतरता के रूप में जो देखते हैं, उसके साथ आँ जो एक अच्छे बॉलपार्क में हैं, और फिर हम एक के बारे में चुनाव कर सकते हैं, हम कभी-कभी विविधता के साथ रहना चुन सकते हैं। इसलिए, ईश्वर ने किसी तरह से इस विविधता को निर्धारित किया है क्योंकि यह मौजूद है। ईश्वर ने हमें वचन दिया है।

ईश्वर ने हमें अपनी छवि में बनाया है, और मुझे लगता है कि छवि धारकों के रूप में, हम ईश्वर की महिमा करते हैं जब हम जोखिम, संघर्ष और आज हमारे लिए ईश्वर के वचन को खोलने के कार्य में लगे रहते हैं। पवित्रशास्त्र के संदर्भ में, ईश्वर का वचन स्थिर है। यह कोई चलता-फिरता लक्ष्य नहीं है।

जैसे-जैसे हम आगे की पीढ़ियों में आगे बढ़ते हैं, यह खुद को पुनः विकसित नहीं करता है। हो सकता है कि कुछ लोग समय-समय पर पवित्रशास्त्र के साथ इस तरह से पेश आते हों, और चर्च की हर पीढ़ी को फिर से चक्र का आविष्कार करना पड़ता है। मैं बाइबल को इस तरह से नहीं देखता।

मैं देखता हूँ कि हमारे सामने यह समझने की चुनौती है कि इसका क्या मतलब है और इस सवाल से निपटना है कि हम इसे समय और स्थान में अपने संदर्भ में कैसे स्थानांतरित करें ताकि हम कह सकें कि हमारे वर्तमान परिवेश में इसका क्या अर्थ है। इसलिए, ईश्वर ने इस विविधता को अनुमति देने और हस्तक्षेप न करने का आदेश दिया है। और मुझे लगता है कि रहस्य यह है कि, एक अर्थ में, इतिहास की परिणति से पहले, ईश्वर हमसे छवि वाहक के रूप में जिम्मेदारी लेने की अपेक्षा कर रहा है।

हमें सोचने, चुनने, समुदाय में अपना जीवन जीने के लिए बनाया गया है, और वह चाहता है कि हम इसे गंभीरता से लें और ऐसा इस तरह से करें जिससे उसकी महिमा हो। अब, आइए आज के

मुख्य विषय पर आते हैं, और यही है कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है। मेरे पास एक प्रतिमान है जिसे मैंने वर्षों में विकसित किया है।

यह प्रतिमान वास्तव में मेरे एक मित्र की एक दिलचस्प स्थिति में मेरे सामने आया, जिसका नाम मैं नहीं बताऊंगा, लेकिन वह एक बहुत प्रसिद्ध ईसाई नेता है। वह ऑस्ट्रेलिया में व्याख्यान दे रहा था, और उसके व्याख्यान के बाद, एक बाइबिल विद्वान, जिसे मैं पहचान नहीं सकता, मुझे वास्तव में यकीन नहीं है कि वह कौन था क्योंकि मेरा मित्र उस समय उसे नहीं जानता था, लेकिन बाइबिल विद्वान उसके व्याख्यान के बाद उसके पास आया और कहा, क्या आपकी शिक्षा बाइबिल की प्रत्यक्ष शिक्षा है, बाइबिल की निहित शिक्षा है, या यह एक रचनात्मक निर्माण है जिसे आपने बाइबिल से एक साथ रखा है? अब, ये सोच के तीन स्तर हैं - प्रत्यक्ष शिक्षा, जिसे आप संदर्भ से साबित कर सकते हैं।

निहित शिक्षा वह है जो कई संदर्भ हमें मजबूर करते हैं लेकिन सीधे तौर पर नहीं कहते। हमने रचनात्मक निर्माण और बड़ी प्रणालियों को एक साथ रखा है ताकि यह दावा किया जा सके कि यह बाइबल को समझने का सबसे अच्छा तरीका है। अब, मैं उन श्रेणियों में से प्रत्येक को थोड़ा और समझाने की कोशिश करूँगा, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप उन पर ध्यान दें।

प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक निर्माण। अब, मेरा मित्र किसी चीज़ के बारे में बाइबल के दृष्टिकोण के बारे में बात कर रहा था, लेकिन इसने उसके सोचने को प्रेरित किया कि यह कैसे एक बाइबल का दृष्टिकोण था। यह नहीं कि यह क्या था, बल्कि यह कैसे था और यह बाइबल से कैसे संबंधित है।

मेरा मानना है कि एक प्रतिमान है, और यह प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक निर्माण का प्रतिमान है जो हमें इस बात पर विचार करने में मदद कर सकता है कि हम व्याख्या की एकता और विविधता को कैसे समझें और उससे कैसे निपटें जिसका हम सभी अनुभव करते हैं। मैं इसे तीन स्तर कहता हूँ कि कैसे बाइबल एक बाइबलीय दृष्टिकोण है, कैसे बाइबल सिखाती है।

मैंने एक छोटा सा चित्रण लिया है, जिसमें वस्तुतः कोई विषय-वस्तु नहीं थी, और वर्षों से, मैंने इसके बारे में बहुत सोचा है और इसे एक मॉडल के रूप में विकसित किया है जिसे मैं आपके साथ साझा कर रहा हूँ। मैं यहाँ अपने घर के अध्ययन कक्ष में बैठा हूँ, जिसके पीछे कई तरह की किताबें रखी हैं। फ्लोरिडा में मेरा एक बहुत ही साधारण सा कार्यालय है।

मेरे पास एक बहुत बड़ी अकादमिक लाइब्रेरी थी जो वास्तव में ह्यूस्टन, टेक्सास में मेरे सेवानिवृत्त होने के बाद लैनियर थियोलॉजिकल लाइब्रेरी में चली गई। आप इसे ऑनलाइन देख सकते हैं, लैनियर, लैनियर थियोलॉजिकल लाइब्रेरी। लैनियर एक सफल वकील हैं जिन्होंने ह्यूस्टन में एक ईसाई पुस्तकालय, एक बाइबिल अध्ययन पुस्तकालय बनाया, और लोगों के लिए अध्ययन और शोध करने के लिए दरवाजे खोले हैं, और उन्होंने अब तक उस पुस्तकालय में दसियों हज़ार किताबें जमा की हैं।

इसलिए, मेरी किताबें उस जगह से हज़ारों मील दूर हैं जहाँ मैं अभी हूँ, जो कुछ मायनों में मुझे बाधा पहुँचाती है क्योंकि मुझे लगता है, ओह, मैं इसे पढ़ना चाहता हूँ जिसे मैंने पहले एक बार एक

खंड में पढ़ा था। लेकिन मैंने यहाँ अपने कार्यालय में जो काम किए हैं, उनके लिए पर्याप्त किताबें इकट्ठी कर ली हैं ताकि मैं आगे बढ़ सकूँ। इसलिए, किताबें महत्वपूर्ण हैं, और जब हम 1 कुरिन्थियों की पुस्तक के औपचारिक परिचय में पहुँचेंगे, तो मैं आपको आधा दर्जन बेहतरीन टिप्पणियों से परिचित कराऊँगा।

मैंने पहले ही उन पर संकेत दिया है, और मैं उनके बारे में थोड़ा और बताऊँगा। वे कुछ ऐसी चीजें हो सकती हैं जो आपके शास्त्रों के अध्ययन को बढ़ा सकती हैं, लेकिन वे सभी सहमत नहीं होंगे। ठीक है।

आपको सामग्री के माध्यम से आगे बढ़ना होगा और इस बारे में अपने निर्णय लेने होंगे कि ये बाइबल की शिक्षाओं में कैसे फिट होते हैं। इसलिए, ईसाई अध्ययन इतना व्यापक और जटिल कार्य है कि इसके लिए अध्ययन के कई क्षेत्रों की आवश्यकता होती है। इसलिए, पृष्ठ 10 पर प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक निर्माणों के बारे में बात करने से ठीक पहले, मैं चाहता हूँ कि आप वह देखें जिसे हम धर्मशास्त्रीय विश्वकोश कहते हैं।

कृपया पृष्ठ 10 पर जाएँ और वहाँ दिए गए चार्ट को देखें। इस पिरामिड का उद्देश्य आपको शास्त्र के अध्ययन और चर्च के कार्य में शामिल विभिन्न विषयों को स्पष्ट करना है। पिरामिड जानबूझकर इस तरह से बनाया गया है क्योंकि पिरामिड शीर्ष पर एक चरमोत्कर्ष पर आते हैं, और आप देख सकते हैं कि हमारे धर्मशास्त्रीय विश्वकोश का चरमोत्कर्ष मंत्रालय धर्मशास्त्र है, मंत्रालय के संदर्भ में धर्मशास्त्र करना।

हम जो कुछ भी करते हैं, चाहे हम हिब्रू और अरामी और ग्रीक का अध्ययन करें, चाहे हम पुराने नियम का अध्ययन करें या नए नियम का, चाहे हम दार्शनिक धर्मशास्त्र, व्यवस्थित धर्मशास्त्र, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र, बाइबिल धर्मशास्त्र, जो भी अनुशासन है जिसका कोई व्यक्ति अध्ययन करता है, यह सब, दिन के अंत में, दुनिया में ईश्वर और मसीह और पवित्र आत्मा की हमारी घोषणा में योगदान करने वाला माना जाता है। और यह सब, निश्चित रूप से, इस पिरामिड के आधार से आता है, जो स्वयं शास्त्र हैं। आप देखेंगे कि यहाँ मेरा आधार व्याख्या से शुरू होता है।

मैं नींव में और गहराई तक जा सकता हूँ और यह निर्धारित करने के बारे में बात कर सकता हूँ कि शास्त्र क्या है। हम कैनन के बारे में बात करते हैं और पाठ्य आलोचना और उस प्रकृति की चीजों के बारे में बात करते हैं, लेकिन वर्तमान उदाहरण के लिए, हम उसके उत्पाद को मानना शुरू करते हैं, और हम व्याख्या से शुरू करते हैं, जो पाठ से अर्थ निकालना है। अब, इस चार्ट के अंतर्गत कुछ वाक्यांश हैं जो बहुत महत्वपूर्ण और बहुत संक्षिप्त हैं।

उदाहरण के लिए, व्याख्या बाइबिल के पाठ के बारे में तर्कपूर्ण निर्णय लेने की योग्यता है। व्याख्या से भी पहले पाठ्य आलोचना होती है जो अध्ययन किए जाने वाले पाठ को स्थापित करती है। इसलिए, व्याख्या पाठ के छोटे-छोटे हिस्सों को देखती है।

व्याख्यात्मक प्रक्रिया में भाषा बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। अगला चरण, जैसा कि यह था, और इन निचले पहलुओं का कोई पवित्र क्रम नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि मेरे पास यहाँ एक

तार्किक क्रम है, जिसे बाइबिल धर्मशास्त्र के रूप में जाना जाता है। बाइबिल धर्मशास्त्र संरचनात्मक और वैचारिक मॉडल प्रदान करता है जिसके भीतर व्याख्या संचालित होती है।

उदाहरण के लिए, बाइबिल धर्मशास्त्र उत्पत्ति को इस रूप में देखता है कि उत्पत्ति क्या है, न कि इस रूप में कि हम इसे क्या बनाना चाहते हैं। यह कथा को देखता है। अब्राहम कथा क्या है? अब्राहम कथा हमें क्या सिखाती है? बाद में, दाऊद कथा क्या है? दाऊद कथा हमें क्या सिखाती है? यह बड़े टुकड़ों को देखता है।

यह उस ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में देखता है जिसमें यह हुआ था। पुराने नियम के व्यक्ति होने का क्या मतलब था? निर्वासन के दौरान भविष्यवक्ता होने का क्या मतलब था? जब जॉन बैपटिस्ट दुनिया में आए और प्रचार करना शुरू किया तो इसका क्या मतलब था? पुराने नियम के कैनन में मलाकी के अंत से लेकर जॉन बैपटिस्ट के समय तक उन शताब्दियों के बाद का संदर्भ क्या था? कोई खुला रहस्योद्घाटन नहीं था, और इसलिए, जब वह दृश्य में आया तो इसका क्या मतलब था? वह कुछ मायनों में एक अजीब व्यक्ति था। खैर, इसका क्या मतलब है? उसने लोगों से बात की जिसे पुराने नियम में दूध और शहद की भूमि कहा जाता है।

खैर, इसका क्या मतलब था? यह दूध और शहद की भूमि क्यों थी? दूसरे शब्दों में, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और समय और स्थान में लोगों के संचार के तरीकों की परंपराओं में जाना ही बाइबिल धर्मशास्त्र है। बाइबिल धर्मशास्त्र केवल व्यवस्थित धर्मशास्त्र की श्रेणियों को लेना और पीछे जाकर व्यवस्थित विषयों पर सामयिक बाइबिल अध्ययन बनाना और उन्हें बाइबिल धर्मशास्त्र कहना नहीं है। यह बाइबिल धर्मशास्त्र नहीं है।

बाइबिल धर्मशास्त्र बाइबिल को उसके मूल संदर्भ में समझने की कोशिश करता है, बिना पाठ पर व्यवस्थित धर्मशास्त्र के बहुत बाद के पश्चिमी निर्माण को लागू किए। तो, आप बाइबिल का अध्ययन उसके हमारे सामने प्रस्तुत किए जाने के बिल्कुल आरंभ में कर रहे हैं। ऐतिहासिक धर्मशास्त्र बहुत महत्वपूर्ण है, और मुझे लगता है कि यह विश्वकोश के इस चरण में आता है।

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि चर्च का विकास कैसे हुआ, खास तौर पर शुरुआती शताब्दियों में, खास तौर पर ईसाई चर्च की पहली पाँच शताब्दियों में, और यह शास्त्रों की गवाही में जो हम देखते हैं, उसे कैसे देखता था। अब, मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि चर्च के पादरियों का महत्व चाहे जितना भी हो, बाइबिल के अर्थ के बारे में उनका अंतिम कथन नहीं है। वे व्याख्या के मुद्दे से उसी तरह निपट रहे थे जैसे हम निपटते हैं।

कुछ मायनों में, हमारे पास बाइबिल, उसके संदर्भ और उसके अर्थ के बारे में उनसे कहीं ज़्यादा जानकारी है, भले ही वे बाइबिल के ज़्यादा करीब रहते थे। वे ऐसे समय और स्थान और संस्कृति में रहते थे जो कभी-कभी पुराने नियम से अलग थी। और इसलिए, हमारे पास ऐतिहासिक धर्मशास्त्र है, फिर व्यवस्थित धर्मशास्त्र।

यह एक चर्च या परंपरा है जो अपने व्युत्पन्न वैचारिक मॉडल के आधार पर अपनी शिक्षाओं को चिंतनशील ध्यान में लाती है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र। मेरे पास व्यवस्थित धर्मशास्त्र के सेटों की एक पूरी दीवार हुआ करती थी।

मेरे पास कुछ ऐसे थे जो कैल्विनिस्ट और रिफॉर्मर्ड थे। मेरे पास कुछ ऐसे थे जो आर्मिनियन थे। मेरे पास विभिन्न व्यक्तियों द्वारा धर्मशास्त्र के नवीनीकरण सेट थे।

दूसरे शब्दों में, मेरे पास कई तरह के व्यवस्थित धर्मशास्त्र थे जिनकी मैं तुलना कर सकता था, और वे पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं की समग्र और बड़ी मैक्रो संरचनाओं के संदर्भ में एक दूसरे से सहमत नहीं थे। अब, वे सभी रूढ़िवादिता के मुद्दे पर एक साथ थे। वे सभी क्राइस्टोलॉजी के मुद्दों पर एक साथ थे।

लेकिन जब बाइबल की व्याख्या के विवरण की बात आती है, तो वे हमेशा सहमत नहीं होते। लेकिन वे चिंतनशील फोकस में लाए, जैसे वेस्लेयन धर्मशास्त्र चिंतनशील फोकस में लाता है, पवित्रशास्त्र की उनकी समझ। एक केकर धर्मशास्त्र चिंतनशील फोकस में लाता है कि ईसाई दुनिया कैसे काम करती है।

एक सुधारवादी धर्मशास्त्री अपनी समझ को चिंतनशील फोकस में लाता है। और इनके बीच कुछ प्रमुख अंतर हैं। हमारा काम, निश्चित रूप से, उन्हें समझना और उनका संश्लेषण करना और यह तय करना है कि आगे कैसे बढ़ना है।

दार्शनिक धर्मशास्त्र है। अब, इसे व्यवस्थित धर्मशास्त्र के सामने रखा जा सकता है, लेकिन मेरे पास यह यहाँ है। यह धर्मशास्त्र का मूल्यांकन और सृष्टि के संघर्षों के साथ एकीकरण है।

हमारे समय के कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दों से निपटने के लिए दार्शनिक धर्मशास्त्र की आवश्यकता होती है। कामुकता का सवाल, ट्रांसजेंडर का सवाल, पुरुष और महिला का मुद्दा, विश्वदृष्टि का मुद्दा। मैंने ज्ञानमीमांसा का उल्लेख किया।

यह सब पवित्रशास्त्र की शिक्षा को बड़े पैमाने पर ध्यान में लाने के मामले में बहुत महत्वपूर्ण है। फिर क्षमाप्रार्थी धर्मशास्त्र है। क्षमाप्रार्थी धर्मशास्त्र इन निष्कर्षों की घोषणा करता है जिन पर हम पहुँच रहे हैं और उनका बचाव करता है।

यह धर्मशास्त्र द्वारा अपने वैचारिक ढांचे की रक्षा है। और मैं वास्तव में इसमें धर्मशास्त्र की घोषणा और उसके वैचारिक ढांचे की रक्षा को जोड़ना चाहूँगा, शायद इसे संशोधित भी करूँ। क्षमाप्रार्थी धर्मशास्त्र बहुत महत्वपूर्ण है।

और फिर हमारे पास मंत्रालय धर्मशास्त्र है, जहाँ हम इस विशाल संरचना को लेते हैं, और इनमें से प्रत्येक फ्रेम में एक कैरियर है। हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करते हैं कि चर्च और दुनिया के लिए चर्च की सेवकाई के लिए इसका क्या मतलब है। अरे, यह एक बहुत बड़ा काम है, है न? क्या हम ऐसे काम के लिए तैयार हैं? खैर, नहीं, हम नहीं हैं।

नहीं, हम ऐसा नहीं कर रहे हैं। लेकिन एक समुदाय के रूप में, हम ऐसा कर सकते हैं। और मुझे लगता है कि यह ऐसी चीज़ है जिस पर चर्च को गंभीरता से विचार करने की ज़रूरत है।

चर्च खुद को इस तरह कैसे ढाल सकता है कि वह सिर्फ एक ही व्यक्ति न होकर विद्वानों का समुदाय बन जाए? आजकल कई बार हमारे पास मंत्रालय का धर्मशास्त्र नहीं होता। हमारे पास मंत्रालय का प्रदर्शन होता है। चर्च को एक सैद्धांतिक मॉडल पर काम करना होता है जो पवित्रशास्त्र से जुड़ा होता है, जो हमारा मार्चिंग ऑर्डर बन जाता है। यही मुख्य बात है।

और आप जो व्याख्यान सुन रहे हैं और बाइबल से सीख रहे हैं, वे ही व्यक्ति हैं जो इसे दुनिया में ले जाने वाले हैं। अपने आप को जितना हो सके उतना तैयार करें। अब, इस विश्वकोश को अलग नहीं किया जाना चाहिए।

मैं द्विभाजित शब्द का प्रयोग करता हूँ। यह आपके लिए नया शब्द हो सकता है, लेकिन मुझे यह शब्द पसंद है। किसी चीज़ को द्विभाजित करना उसे अलग करना है।

द्वि का मतलब है इसे अलग करना। इस विश्वकोश को दो भागों में नहीं बाँटना है। इसे एकीकृत करना है।

अगर मेरे पास आपके लिए एक शानदार पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन होता, तो मैं इस पिरामिड को पानी के फव्वारे में बदल देता। और नीचे पानी का एक तालाब होता। इसे पूरे पिरामिड में पंप किया जाता, और फिर यह एक फव्वारे के रूप में बहता, सभी चरणों से वापस नीचे आता, और फिर से पंप किया जाता।

यह चक्रीय है। धर्मशास्त्रीय विश्वकोश यहाँ, यहाँ और यहाँ नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे एकीकृत किया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक दूसरे को सूचित कर सके और हम अपनी कमज़ोरियों के क्षेत्रों में मदद के लिए एक-दूसरे की ओर देख सकें जहाँ कोई और मज़बूत हो सकता है। एक अर्थ में, मंत्रालय के पेशेवर के लिए एक अच्छी लाइब्रेरी में सभी विश्वकोशों के पहलू होंगे जो आपको कॉल पर सिखाने के लिए इंतज़ार कर रहे होंगे ताकि आप जा सकें और सीख सकें और इसी तरह की जानकारी को एकीकृत कर सकें।

हाँ, यह बहुत ही भारी है। मैं बहुत ही अभिभूत हूँ। मैं कई सालों से यह काम कर रहा हूँ, और फिर भी मैं इस कार्य के संबंध में एक बौने की तरह महसूस करता हूँ कि धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधित्व करना और उनके द्वारा हमें दिए गए वचन का वाहक और रक्षक बनना क्या मायने रखता है।

यह एक महान कार्य है, और इसे हमें बहुत गंभीरता से लेना चाहिए। इसलिए, यह विश्वकोश है जिससे हमें खुद को परिचित करने की आवश्यकता है। पृष्ठ 10 के नीचे उस छोटे पैराग्राफ में, तीसरी पंक्ति के नीचे बोल्ड प्रिंट पर ध्यान दें।

मैं यह टिप्पणी करता हूँ। एक रिवर्स प्रक्रिया, दूसरे शब्दों में, अगर हम इस चीज़ को पलट दें और इसे इसके ऊपर घुमा दें, तो एक रिवर्स प्रक्रिया बाइबल के पाठ को पढ़ने के बजाय बाइबल के पाठ में पढ़ती है। मुझे इसे फिर से कहने दें।

अगर हम धर्मशास्त्रीय विश्वकोश को उलट दें और मंत्रालय धर्मशास्त्र को आधार बना दें, तो हम पूरे विश्वकोश को गड़बड़ कर देंगे क्योंकि मंत्रालय उन सभी अन्य चीजों का एक उत्पाद है। यह कोई स्रोत नहीं है। आप ऊपर से नीचे तक काम नहीं कर सकते।

आप नीचे से ऊपर की ओर काम करते हैं। प्रत्येक अगले को सूचित करता है, और वे सभी एकीकृत होते हैं ताकि हम एक दूसरे से सीख सकें। सेवकाई करने से व्याख्या या बाइबिल या ऐतिहासिक या व्यवस्थित या दार्शनिक धर्मशास्त्र में एक व्यक्ति को यह समझने में मदद मिल सकती है कि वे क्या करते हैं, जबकि दूसरे लोग बाहर जाकर दुनिया को बाइबिल की शिक्षा का प्रचार करते हैं।

इसलिए, हमें एकीकृत करना है, विभाजित नहीं करना है। हमें इन सभी विषयों को एक साथ लेना है और उन्हें काम में लाने की कोशिश करनी है, जैसा कि हम अपनी दुनिया के प्रमुख विषयों पर काम करते हैं। आप में से कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो इन पाठ्यक्रमों का ऑडिट कर रहे हैं और जो दुनिया के दूसरे हिस्से में मंत्रालय के नेता हैं, शायद एशिया में, शायद कुछ स्लाव देशों में, दक्षिण अमेरिका में, अरबी देशों में, मध्य पूर्व में, मध्य पूर्व में, एशिया में।

तो, कई जगहें हैं जहाँ मंत्रालय होता है, और आप मंत्रालय के नेता हैं, और आप कह सकते हैं, मैं बहुत अभिभूत महसूस करता हूँ। खैर, यह अच्छा है, क्योंकि जैसे अय्यूब बेहतर तरीके से लड़ने के लिए उलझन में था, आपका अभिभूत होना आपको जो कुछ भी करते हैं उसकी गंभीरता दिखाता है। और इसलिए, आप अभिभूत होने से कैसे निपटते हैं? आप नेतृत्व के एक समुदाय को एक साथ लाने की कोशिश करते हैं जो काम कर सकता है और मंत्रालय धर्मशास्त्र को आपके लोगों तक इस तरह से ला सकता है कि यह न केवल आपके चर्च के लिए संख्या जुटाएगा, हालाँकि संख्याएँ अच्छी हैं, बल्कि इसे एक आधार देगा जिसे बदलते समय, बदलती संस्कृति के माध्यम से बनाए रखा जा सकता है।

कई चर्च और मुझे लगता है कि शायद संयुक्त राज्य अमेरिका, कुछ मायनों में इस सूची में सबसे ऊपर हैं, और कई मायनों में, संयुक्त राज्य अमेरिका के चर्च को अपना रास्ता खोने की चुनौती है। यह वचन की घोषणा करने में सक्षम होने के लिए नौटंकी की तलाश कर रहा है, बजाय इसके कि हमें जिस तरह की नींव की आवश्यकता है, उसे स्थापित करने के लिए जिससे वचन की घोषणा की जा सके। इसलिए, हमारे सामने चुनौतियाँ हैं, और वे हम सभी पर लागू होती हैं, न कि केवल कुछ पर।

अब, इसलिए हम इन श्रेणियों में नीचे से ऊपर की ओर काम करते हैं। अब, हम मेरे प्रतिमान के अगले पहलू पर आते हैं, जो कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है, इसका प्रतिमान है। मैं बाइबल की शिक्षा के तीन स्तर कहता हूँ, और वे हमें प्रत्यक्ष तरीके से, निहित तरीके से, और रचनात्मक निर्माण तरीके से सिखाते हैं।

पृष्ठ 11 पर नज़र डालें, और आपको बाइबल की शिक्षा के तीन स्तर नामक चार्ट मिलेगा। मैंने एक बार फिर पिरामिड का इस्तेमाल करके दिखाया है कि यह कैसे काम करता है। तो, सीधा पिरामिड के निचले भाग में है।

हमारा पहला काम यह पता लगाना है कि बाइबल वास्तव में अपने समय और स्थान में, अपनी परंपराओं में क्या कहती है, और इसका उद्देश्य अपने मूल श्रोताओं को क्या संदेश देना था। फिर, हम उससे आगे बढ़कर शास्त्र के बड़े खंडों में चले जाते हैं। क्या निहित है? मैंने इनमें से प्रत्येक श्रेणी को कुछ विस्तार से प्रिंट किया है, और मैं उनमें से प्रत्येक को बस एक पल में चित्रित करूँगा।

शास्त्रों में बहुत सारे बहुत, बहुत, बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो सीधे तौर पर नहीं बताए गए हैं। मैं इसे दूसरे तरीके से कहता हूँ। आप बाइबल में जाकर कोई प्रमाण-पाठ नहीं ढूँढ़ सकते।

प्रमाण पाठ एक अवधारणा है। यहाँ एक बाइबल श्लोक है जो बिल्कुल वही कहता है जो मैं आपको बताने की कोशिश कर रहा हूँ। ऐसे कई महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिनके लिए कोई प्रमाण पाठ नहीं है। हालाँकि, कई महत्वपूर्ण मुद्दों को संकलन, पाठ के सहसंबंध और विभिन्न शिक्षाओं के माध्यम से शास्त्र द्वारा संबोधित किया जाता है।

उदाहरण के लिए, बाइबल में कोई आयत नहीं है, और हम इस बारे में 1 कुरिन्थियों 7 में बात करेंगे, जिसमें कहा गया है, पतियों, अपनी पत्नियों को मत मारो, उदाहरण के लिए। ऐसी कोई आयत नहीं है जो सिर्फ यह कहती हो कि अपनी पत्नियों को मत मारो। खैर, मुझे लगता है कि हम बहुत मूर्ख होंगे अगर हम सोचें कि अगर परमेश्वर हमें इस सवाल का जवाब देने के लिए आमने-सामने बुलाता है, तो वह कहेगा, अपनी पत्नियों को मत मारो।

लेकिन हमारे पास एक ऐसा धर्मग्रंथ है जो अपनी पत्नियों से प्यार करने की बात करता है। हमारे पास एक ऐसा धर्मग्रंथ है जो लिंगों के बीच सम्मान की बात करता है: पुरुषों का महिलाओं के प्रति और महिलाओं का पुरुषों के प्रति। यहाँ तक कि माता-पिता का बच्चों के प्रति भी।

बाइबल हमें बताती है कि हमें अपने बच्चों को निराश नहीं करना चाहिए। यह एक दिलचस्प बात है, है न? इसका उत्तर यह है कि हम अपने बच्चों को निराश क्यों नहीं करते? मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि ऑडिट कौन कर रहा है; यदि आप पुरुष हैं, तो क्या आप अपनी पत्नी को निराश करते हैं? या आप उसे बढ़ावा देते हैं और उसकी मदद करते हैं? और मैं यही बात महिलाओं से भी कह सकता हूँ। क्या आप अपने पति को निराश करती हैं? या आप अपने पति को बढ़ावा देती हैं और उनकी मदद करती हैं? तो, एक पारस्परिक बात यह है कि जब हम शास्त्र के सभी विवरणों को देखना शुरू करते हैं, तो हमारे पास ऐसा कोई प्रमाण पाठ नहीं हो सकता है जिसमें इतने सारे शब्द हों जिनकी हमें तलाश है, लेकिन हमारे पास इसकी सच्चाई को खोजने के लिए बहुत सारे स्थान हैं।

विल्बरफोर्स का कोई बड़ा जश्न मनाए हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ है। पश्चिमी दुनिया में आप विल्बरफोर्स का नाम जानते होंगे, जिन्होंने दास व्यापार को समाप्त करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह घटना इंग्लैंड में हुई थी, और यह बहुत दुखद बात है क्योंकि दास प्रथा को रोका गया था, न कि इसलिए कि इसे रोकने वाले राजनीतिक लोगों ने इसकी नैतिकता को पहचाना।

इसे आर्थिक कारणों से रोका गया था। क्या यह दुखद नहीं है? लेकिन पुरुषों का एक बहुत ही चतुर समूह इसे सफल बनाने में सफल रहा और इसे बंद करवा दिया क्योंकि यह अब पैसे कमाने वाली चीज़ नहीं रह गई थी। पश्चिमी दुनिया के इतिहास में यह दुखद है।

इसे नैतिक आधार पर रोका जाना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। अब, दुर्भाग्य से, और कुछ मायनों में, बाइबल में एक भी श्लोक ऐसा नहीं है जो कहता है, गुलाम मत बनाओ। वास्तव में, नया नियम लगातार मसीह के गुलाम होने के बारे में बात कर रहा है, एक रूपक का उपयोग करते हुए क्योंकि यह संस्कृति का इतना हिस्सा था।

पहली सदी में गिरमिटिया लोग हर जगह थे। रोम में, वास्तव में, एक कहानी है जो कहती है कि एक समय में, रोम की सत्ता संरचनाओं में किसी को यह बढ़िया विचार आया कि गिरमिटिया नौकरों को एक खास तरह से कपड़े पहनाए जाएं ताकि हर कोई जान सके कि वे कौन हैं। मैंने यह कहानी सुनी है, पढ़ी है, और इसका हवाला भी देखा है।

मैं इसकी ऐतिहासिकता की गारंटी नहीं दे सकता, लेकिन यह निश्चित रूप से एक अर्थ में यहाँ एक अच्छा उदाहरण है। लेकिन उन्होंने पाया कि जब वे अगले दिन बाहर गए, तो इसे कहानी के रूप में बताने के लिए, उन्होंने चारों ओर देखा और पाया कि मुक्त लोगों की तुलना में अधिक लोग गिरमिटिया नौकरों की पोशाक पहने हुए थे। खैर, यह रोम में नौकरों के लिए विशेष वर्दी के साथ समाप्त हुआ।

वे इतना ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते थे। रोमन साम्राज्य के इतिहास में कुछ प्रसिद्ध लोग वास्तव में नौकर थे। वे किसी के स्वामित्व में थे।

यह अक्सर एक ही तरह की गुलामी नहीं थी, और कभी-कभी ऐसा होता था। उदाहरण के लिए, ग्लेडिएटर गुलामी का एक रूप था। हाल के दिनों में हम कुछ किताबों और अन्य चीज़ों की वजह से इससे थोड़ा परिचित हैं।

लेकिन अमेरिकी गुलामी एक पूरी तरह से अलग तरह की भयानक गुलामी थी, जो कुछ रोमनों, कुछ नेताओं और रोमन व्यवस्था में कुछ शैक्षिक नेताओं को वास्तव में बंधुआ बनाकर दी गई थी। हमारे पास कोई श्लोक नहीं है, लेकिन मैं आपको बताना चाहूँगा कि बाइबल गुलामी में जो कुछ भी हम देखते हैं, उसके खिलाफ है, बहुत हद तक इसके खिलाफ है। वास्तव में, हम फिलेमोन की पुस्तक ले सकते हैं और जो मैं शिक्षण का एक अत्यंत मजबूत निहितार्थ कहूँगा, वह एक प्रमाण पाठ नहीं है क्योंकि पॉल ओनेसिमस को फिलेमोन के पास वापस नहीं भेजता है।

ओनेसिमस एक भगोड़ा गुलाम था। लेकिन वह फिलेमोन को शिक्षा देने, ओनेसिमस को भाई की तरह मानने के लिए कहता है। और इसलिए फिलेमोन के भीतर बहुत मजबूत निहितार्थ हैं, और फिर भी यह बिल्कुल प्रमाण पाठ नहीं है।

और इसलिए, बाइबल के निहितार्थ स्तर गंभीर हैं, लेकिन वे एक आयत खोजने जितना सरल नहीं हैं। अब, मैं बहुत जल्दी प्रमाण पाठ के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। लोगों के लिए बाइबल का उपयोग करना और एक आयत खोजना बहुत लुभावना है जो वे कहना चाहते हैं।

आप ऐसा कर सकते हैं। बाइबल एक बड़ी किताब है, और अगर आप ध्यान से पढ़ेंगे, तो आपको शब्दों की एक श्रृंखला मिलेगी जो आपके द्वारा कही गई बातों को उचित ठहराएगी। यह उसे उचित नहीं ठहराती।

यह सिर्फ मौखिक सहमति है। लेकिन सच्चाई यह है कि आप इन बातों को संदर्भ से बाहर खींच लेते हैं। मुझे एक अंश याद है, उदाहरण के लिए, बुराई के सभी आभासों से बचें, यही वह तरीका था जिससे किंग जेम्स ने थिस्सलुनीकियों के पाठ का अनुवाद किया था।

और मुझे याद है कि जब मैं एक युवा ईसाई था तो उस समय यह श्लोक इस्तेमाल किया जाता था। सिनेमाघर मत जाओ। फिल्में बुरी होती हैं।

ऐसे रेस्टोरेंट में न जाएँ जो बार भी हो क्योंकि शराब पीना बुरी आदत है। और लोगों ने इसका इस्तेमाल लोगों को अपनी मनचाही दिशा में ले जाने के लिए एक प्राइ बार, एक क्राउबर के रूप में किया। उन्होंने इसका इस्तेमाल सबूत के तौर पर किया।

खैर, यह श्लोक ऐसा नहीं है। श्लोक का शाब्दिक अर्थ है हर तरह की बुराई से बचना। अब, आपको बाइबल में जाकर किसी चीज़ को बुराई के रूप में परिभाषित करना होगा, इससे पहले कि आप दूसरे लोगों को उस दिशा में ले जाएँ, जिस दिशा में आप उन्हें ले जाना चाहते हैं।

इसलिए, इस श्लोक को समझने के बजाय इसका दुरुपयोग किया गया। ऐसे कई अंश हैं, और हम सभी को अंशों को लेकर उन्हें अपनी इच्छानुसार बदलने का खतरा है। मेरे पास इसका एक छोटा सा उदाहरण है।

मैं हेर्मेनेयुटिकल वेंट्रिलोक्विज्म नामक एक कल्पना का उपयोग करता हूँ। अब, हेर्मेनेयुटिक्स एक ऐसा शब्द है जिसका संबंध बाइबल की व्याख्या से है। वास्तव में, यह शब्द ग्रीक न्यू टेस्टामेंट में भी है।

जब यीशु क्रूस पर थे, और उन्होंने यीशु के सिर पर यहूदियों के राजा होने का चिन्ह लगाया और इसी तरह, इसमें उस शब्द का इस्तेमाल किया गया, जिसका अर्थ इस प्रकार लगाया गया। क्या मैंने वह चित्रण सही समझा? आप बेहतर तरीके से इसे देखें। मैं इस बिंदु पर टेप को रोकने और इसे संपादित करने का प्रयास नहीं करने जा रहा हूँ।

लेकिन जब मैं किसी ऐसे उदाहरण का उपयोग करने की इस विधा में जाता हूँ जिसे मैंने लिखा नहीं था, तो कभी-कभी मैं उस पर थोड़ा सा वरिष्ठ क्षण ले सकता हूँ। लेकिन आप जानते हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ, जिसकी व्याख्या इस प्रकार की जाती है। तो, व्याख्याशास्त्र का संबंध व्याख्या से है।

हेर्मेनेयुटिकल वेंट्रिलोक्विज्म, कल्पना यह है। आप जानते हैं कि वेंट्रिलोक्विस्ट क्या होता है, एक व्यक्ति जिसके पास एक छोटी सी पुतली गुड़िया होती है और वह गुड़िया में अपना हाथ रखता है और गुड़िया से वह कहलवाता है जो वे उससे कहलवाना चाहते हैं। हेर्मेनेयुटिकल वेंट्रिलोक्विज्म

तब होता है जब लोग बाइबल लेते हैं और इसे एक डमी की तरह व्यवहार करते हैं और उससे वह कहलवाते हैं जो वे उससे कहलवाना चाहते हैं।

हमारी दुनिया में बहुत सारे हेर्मेनेयुटिकल वेंट्रिलोकिज्म हैं। ज़रूर, आप बाइबल में जाकर कुछ शब्द ढूँढ़ सकते हैं और जो आप कहना चाहते हैं, उसे कह सकते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या बाइबल यही सिखा रही है, या आपने शास्त्र में ऐसा अर्थ डाला है जो कभी था ही नहीं? हम सभी को सावधान रहने की ज़रूरत है। निहित स्तर पर, ऐसा करना बहुत आसान है, लेकिन अगले स्तर पर ऐसा करना और भी आसान है, जो सबसे ऊपर रचनात्मक निर्माण स्तर है।

रचनात्मक निर्माण स्तर एक ऐसा निर्माण है जो डेटा से बनाया जाता है और कुछ सिखाने के लिए सिस्टम में डाला जाता है। उदाहरण के लिए, प्रीमिलेनियलिज्म अंत समय के बारे में एक रचनात्मक निर्माण है। सभी सहस्राब्दिवाद अंत समय के बारे में एक रचनात्मक निर्माण है।

केल्विनवाद एक रचनात्मक रचना है। आर्मिनियनवाद एक रचनात्मक रचना है। इसका मतलब यह नहीं है कि वे छंदों से बंधे नहीं हैं।

वे सभी स्पष्ट रूप से अंशों से बंधे होने का दावा करेंगे, लेकिन उनमें से प्रत्येक संपूर्ण बाइबल की एक बड़ी मैक्रो व्याख्या है, और फिर बाइबल के टुकड़े उस मैक्रो व्याख्या में फिट हो जाते हैं। यह एक और कारण है, और आप बहुत जल्दी देख सकते हैं कि ऐसा क्यों है कि हमारे पास कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्रों में व्याख्या की यह विविधता है क्योंकि, मनुष्य के रूप में, हम शास्त्रों तक आए हैं और अपनी रचनाएँ बनाई हैं। यह एक लंबी अवधि में होता है।

यह आमतौर पर ऐतिहासिक रूप से एक समुदाय के भीतर होता है, लेकिन फिर अंततः, कोई व्यक्ति इस विशेष निर्माण पर मैनुअल लिखता है, और फिर बाकी सभी लोग लाइन में लग जाते हैं। खैर, हमें उन चीजों का परीक्षण करने की आवश्यकता है क्योंकि उनमें से किसी भी दृष्टिकोण के लिए कोई प्रमाण पाठ नहीं है, लेकिन ग्रंथों का एक संकलन है जिसे एक तार्किक तरीके से एक साथ लाया गया है ताकि पूरे शास्त्र की एक निश्चित बड़ी समझ को साबित करने का प्रयास किया जा सके। उदाहरण के लिए, आपके पास वह है जिसे हम वाचा धर्मशास्त्र कहते हैं जो बाइबल को एक निश्चित तरीके से देखता है।

आपके पास डिस्पेंसेशनल थियोलॉजी है जो बाइबल को एक खास तरीके से देखता है। ये दोनों लेंस की तरह हैं जो शास्त्रों को कुछ खास समझ के अनुरूप लाने के लिए शास्त्रों पर लगाए जाते हैं। अब, सावधान रहें क्योंकि वे दावा करेंगे, और वे सही भी होंगे, कि शास्त्रों ने उन्हें उन समझों तक पहुँचाया।

हर कोई यह दावा करता है, है न? क्या कोई यह दावा नहीं करता कि बाइबल के बारे में उनका व्यापक दृष्टिकोण बाइबल के अध्ययन का उत्पाद नहीं है? हर कोई यह दावा करता है, और फिर भी देखें कि हमारे बीच कितने मतभेद हैं। हमारा काम यह नहीं है कि हम अपनी बाहें फैला दें और कहें कि मुझे क्या करना चाहिए? हमारा काम इसके बारे में जागरूक होना है, और सभी विविधताओं से पीड़ित होने के बजाय, विविधता से निपटना है, विविधता को वर्गीकृत करना है,

और इसे चिंतनशील फोकस में लाना है। अब, प्रत्यक्ष, निहित और रचनात्मक के इस निर्माण में, मैं चाहता हूँ कि आप कुछ और देखें।

मेरे पिरामिड के किनारों पर ऊपर की ओर जाने वाले तीर हैं। बाईं ओर, हम शिक्षण के उद्देश्य से धार्मिक विश्लेषण की ओर बढ़ते हैं। यह किस बारे में है? खैर, पिरामिड के निचले भाग में, जब आप किसी निश्चित मार्ग से निपट रहे होते हैं, तो आप व्याख्यात्मक और बाइबिल धर्मशास्त्र में बहुत आगे जा सकते हैं, यह निर्धारित करने के लिए कि उस पाठ का क्या अर्थ है।

पाठ में एक अर्थ होता है। हम शायद उसमें निपुण न हों, लेकिन हम यह निर्धारित करने में बहुत आगे बढ़ सकते हैं कि लेखक क्या कर रहा था और वह संचार किस बारे में था। यही शिक्षण अभिप्राय है।

लेखकीय इरादा इसे कहने का एक और तरीका है। अब, मुझे एहसास हुआ कि मैं बहुत जागरूक हूँ और लेखकीय इरादे के बारे में सभी बहस में नहीं पड़ सकता। वानहूजर की प्रसिद्ध पुस्तक, क्या पाठ में कोई अर्थ है, इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि हाँ, ऐसा है।

यह पढ़ने के लिए एक बहुत ही संरचित पुस्तक है। तो, इसमें हेर्मेनेयुटिक्स का पूरा इतिहास है। क्या पाठ में कोई अर्थ है, और हम उस अर्थ को कैसे प्राप्त करते हैं? लेकिन मैं बस आपको बता रहा हूँ, हाँ, है। यही शिक्षण का उद्देश्य है।

लेकिन जैसे-जैसे आप पिरामिड में रचनात्मक निर्माण की ओर बढ़ते हैं, आप उस क्षेत्र में आते हैं जिसे धार्मिक विश्लेषण के रूप में जाना जाता है, जहाँ कुशल व्यक्ति बाइबल के अध्ययन में और शायद अपनी खुद की परंपरा के अध्ययन में पूरी तरह से प्रशिक्षित होते हैं ताकि वे शास्त्र और अर्थ को एक साथ ला सकें, जैसा कि उन्होंने एक परंपरा के रूप में जाना है, और विभिन्न व्याख्याओं के इन धार्मिक विश्लेषणों को चिंतनशील फोकस में लाना है, बाइबल और ईसाई मंत्रालय के बारे में कैसे जाना जाए, इस बारे में विभिन्न मैक्रो संरचनाओं को। तो यह बाईं ओर है। इसलिए, जैसे-जैसे हम पिरामिड में ऊपर जाते हैं, हम और अधिक व्याख्या कर रहे हैं।

जैसे-जैसे हम नीचे जाते हैं, हम मूल रूप से कही गई बात के करीब पहुँचते जाते हैं। लेकिन एक बार फिर, पिरामिड दो भागों में विभाजित नहीं है; यह एकीकृत है ताकि हम नीचे से ऊपर तक तर्क की रेखाओं को देख सकें, और हम उन तर्क रेखाओं का परीक्षण कर सकें और कह सकें, ये मजबूत हैं। ये इतनी मजबूत नहीं हैं। ये सम्मोहक हैं, लेकिन ये इतने सम्मोहक नहीं हैं।

दिन के अंत में, हालांकि, मैं गारंटी दे सकता हूँ कि वे रचनात्मक निर्माण में फिट होंगे क्योंकि कुशल लोग जब धर्मशास्त्र लिखते हैं तो यही करते हैं। पिरामिड के दाईं ओर, हमारे पास टैक्सोनॉमी के रूप में जाना जाता है। टैक्सोनॉमी एक शैक्षिक शब्द है, और इसका संबंध सरल से जटिल तक समझ के स्तरों से है।

और इसलिए, चार्ट के निचले भाग में, हम इसे कम टैक्सोनॉमी कहते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक आसान टैक्सोनॉमी है। इसका मतलब यह है कि यह टैक्सोनॉमी के लिए एक अधिक क्रूर-बल दृष्टिकोण है।

आप अध्ययन कर सकते हैं कि यूहन्ना 3 का क्या मतलब है जब वह कहता है कि, जब तक मनुष्य दोबारा जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता। आपको इस कथन को समझने और उद्धार के इतिहास में इसके अर्थ के बारे में विभिन्न दृष्टिकोण मिलेंगे। आप वहाँ जाकर इसे खोज सकते हैं और कुछ अच्छे विचार लेकर आ सकते हैं।

इसमें ऐसे तथ्य हैं जिन्हें आप खोज सकते हैं। यह वर्गीकरण के निचले सिरे पर है। जैसे-जैसे आप पिरामिड में ऊपर जाते हैं, आपके पास एक उच्च वर्गीकरण होता है, जिसका अर्थ है कि आपके पास बहुत अधिक माध्यमिक धारणाएँ हैं।

इसका मतलब यह है क्योंकि मुझे लगता है कि इसका मतलब यहाँ यह है और क्योंकि मैं इसे यहाँ इस अर्थ के रूप में देखने लगा हूँ, तो इसका मतलब यहाँ यह होना चाहिए। यह मान्यताओं का एक संबंध है। और, ज़ाहिर है, जैसा कि हम अच्छी तरह जानते हैं, मान्यताओं का हमेशा परीक्षण किया जाना चाहिए।

इसीलिए हमारे पिरामिड के शीर्ष पर स्थित चीज़ों, इन वृहद प्रणालियों और रचनात्मक संरचनाओं को, जिन्हें धर्मशास्त्र के इतिहास ने निर्मित किया है, परखने की आवश्यकता है। वे शास्त्र नहीं हैं। वे प्रमाण नहीं हैं।

वे धर्मग्रंथों की उपज हैं, और इसलिए, हमें उन्हें धर्मशास्त्रीय विश्वकोश के माध्यम से वापस चलाना चाहिए। हमें उन्हें प्रत्यक्ष निहित और रचनात्मक निर्माणों के पिरामिड के माध्यम से वापस चलाना चाहिए ताकि हम धर्मग्रंथों की व्याख्या के बारे में विभिन्न तर्कों की बाध्यकारी प्रकृति या बाध्यकारी प्रकृति की कमी के बारे में एक ठोस निर्णय ले सकें। अब, मुझे पता है कि यह एक व्याख्यान में बहुत कुछ लेना है, जहाँ आप दुनिया के दूसरे हिस्से में हैं, और मैं यहाँ हूँ, और मैं एक सिंथेटिक प्रस्तुति दे रहा हूँ।

हम एक सेमेस्टर नहीं ले सकते, इसलिए हमें ऐसे ब्लॉक बनाने की ज़रूरत है जो आपको इसे समझने में मदद करेंगे। मुझे लगता है कि आप उन बुनियादी बिंदुओं को समझ सकते हैं जो बताए जा रहे हैं। मुझे लगता है कि उन बिंदुओं की समझ चुनौतीपूर्ण होगी।

आप इसे कैसे एकीकृत करते हैं? आप इसे अपने धर्मशास्त्रीय और मंत्रालय के संदर्भ में कैसे लागू करते हैं? खैर, इसमें समय लगता है, लेकिन इसके लिए शुरुआत की ज़रूरत होती है, और शुरुआत अभी से होती है, जहाँ आप मेरे हैंडआउट को पढ़ते हैं और जहाँ आप इन चीज़ों के बारे में सोचते हैं। अब, मैं इन वीडियो व्याख्याओं को कम से कम कुछ समय सीमा के भीतर रख रहा हूँ ताकि आपको इन वीडियो में एक सेटिंग में बहुत ज़्यादा समय तक बैठना न पड़े। इसका मतलब है कि मैं कुछ हैंडआउट को बीच में रोककर उन पर वापस आऊँगा, और यही मैं अभी करने जा रहा हूँ।

हम वीडियो लेक्चर नंबर तीन में हैं, और हमने देखा है कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है। हमने एक आधार तैयार कर लिया है। मैं वीडियो नंबर चार के साथ वापस आऊँगा, और हम इस

बातचीत को जारी रखेंगे और इसमें सत्यापन का मुद्दा जोड़ेंगे, जो कि अगला हैंडआउट है, नोट्स का अगला पैकेट जिसे आप साइट से प्राप्त कर सकते हैं।

मैं यह बताने की कोशिश करूँगा कि बाइबल किस तरह सिखाती है और आप बाइबल पर किस तरह शोध करते हैं, ताकि आपको इस बात की बड़ी तस्वीर मिल सके कि बाइबल को अपना मार्गदर्शक बनाने का क्या मतलब है, बाइबल को एक उमी के रूप में न समझें, एक व्याख्यात्मक पेटलोकिस्ट के रूप में न देखें, बल्कि बाइबल को गंभीरता से लें और बाइबल को खुद चलाने दें, न कि खुद बाइबल को। मैं आपसे अगली बार मिलूँगा।

यह डॉ. गैरी मीडर्स 1 कुरिन्थियों की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह व्याख्यान 3 है, बाइबल हमें कैसे सिखाती है। बाइबल शिक्षण के तीन स्तर, भाग 1।